

हस्त-युगल जिनवर कहें, पर का कर्ता होय ।
 ऐसी मिथ्याबुद्धि से ही, भ्रमण चतुरगति होय ॥
 यातैं पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥२॥
 लोचन द्वय जिनवर कहें, देखा सब संसार ।
 पर दुःखमय गति चतुर में, ध्रुव आत्मतत्त्व ही सार ॥
 यातैं नाशादृष्टि विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥३॥
 अन्तर्मुख मुद्रा अहो, आत्मतत्त्व दरशाय ।
 जिनदर्शन कर निजदर्शन पा, सत्गुरु वचन सुहाय ॥
 यातैं अन्तर्दृष्टि विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥४॥

(५)

आओ जिन मंदिर में आओ,
 श्री जिनवर के दर्शन पाओ ।
 जिन शासन की महिमा गाओ,
 आया-आया रे अवसर आनन्द का ॥टेक॥
 हे जिनवर तव शरण में, सेवक आया आज ।
 शिवपुर पथ दरशाय के, दीजे निज पद राज ॥
 प्रभु अब शुद्धातम बतलाओ,
 चहुँगति दुःख से शीघ्र छुड़ाओ ।
 दिव्य-ध्वनि अमृत बरसाओ ।
 आया-प्यासा मैं सेवक आनन्द का ॥१॥
 जिनवर दर्शन कीजिए, आत्म दर्शन होय ।
 मोहमहातम नाशि के, भ्रमण चतुर्गति खोय ॥
 शुद्धातम को लक्ष्य बनाओ ।
 निर्मल भेद-ज्ञान प्रकटाओ ।
 अब विषयों से चित्त हटाओ,
 पाओ-पाओ रे मारग निर्वाण का ॥२॥